Dr.Uttam Kumar

S.R.A.P College,Barachakia
Mob.No.8210561032

Session -2023-27

Faculty - Commerce

Class-Second Semester

Subject -Business Organisation

जा सकता है।

व्यावसायिक क्रियाओं का वर्गीकरण
(CLASSIFICATION OF BUSINESS ACTIVITIES)

व्यवसाय के अन्तर्गत अनेक प्रकार की क्रियाएँ सम्मिलित की जाती है, जैसे—क्रय-विक्रय, उत्पादन, वितरण, बैंकिंग, वित्त, व्यापार, उद्योग, यातायात आदि। मुख्य रूप से व्यावसायिक क्रियाओं को निम्नलिखित दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है—(I) उद्योग (Industry), (II) वाणिज्य (Commerce)।

(I) उद्योग (Industry)

उद्योग का अर्थ (Meaning of Industry)—उद्योग में मुख्य रूप से वे क्रियाएँ सम्मिलित है जो वस्तुओं के उत्पादन से सम्बन्धित होती है। वस्तुओं का उत्पादन अन्तिम उपभोक्ताओं के प्रयोग के लिए हो सकता है अथवा अन्य निर्माताओं के लिए कच्चे माल के रूप में प्रयोग करने के लिए हो सकता है। अन्तिम उपभोक्ताओं के प्रयोग के लिए जो वस्तुएँ बनायी जाती है उन्हे उपभोक्ता वस्तुएँ कहते है और अन्य निर्माताओं के लिए आगे उत्पादन करने के लिए कच्चे माल के रूप में काम में लेने के लिए जो वस्तुएँ बनायी जाती है उन्हे पूँजीगत अथवा निर्माता की वस्तुएँ कहते है। सरल शब्दों में, उद्योग का अर्थ उन समस्त क्रियाओं से है जो कच्चे माल को निर्मित माल के रूप में अथवा विक्रय योग्य अवस्था में लाती है। इस प्रकार उद्योग वस्तुओं में रूप उपयोगिता प्रदान करता है। उद्योग द्वारा उपभोक्ता वस्तुएँ और पूँजीगत वस्तुएँ बनाकर उपभोक्ताओं की आवश्यकता की सन्तुष्टि और अन्य उद्योगों या उत्पादकों के लिए कच्चे माल की पूर्ति की जाती है।

उद्योगों का वर्गीकरण अथवा प्रकार—उद्योगों को निम्न चार भागों में विभाजित किया जा सकता है—

(1) **उत्पत्ति अथवा खाद्य उद्योग** (Genetic Industry)—इस वर्ग में वे उद्योग सम्मिलित होते है जो भूमि से कृषि सम्बन्धी क्रियाएँ करके खाद्य वस्तुएँ पैदा करते है जैसे—कृषि उद्योग, वन उद्योग तथा मत्स्य उद्योग आदि। यह उद्योग हमारे लिए खाद्य तथा अन्य उद्योगों के लिए आवश्यक कच्चे माल का उत्पादन करता है इसी विचार से कुछ विद्वानों ने इसे 'प्रारम्भिक' (Primary) उद्योग के नाम से भी सम्बोधित किया है।

(2) **निष्कर्षण उद्योग** (Extractive Industry)—जैसा कि इसके नाम से ही विदित है, इसके अन्तर्गत भूमि से खनिज पदार्थों को निकालना होता है। दूसरे शब्दों में, प्रकृति की गोद से मानवीय प्रयत्नों द्वारा प्राप्त की गई वस्तुएँ अथवा पदार्थ जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रयोग में लाये जाएँ, इस वर्ग के अन्तर्गत आते है, जैसे—खनन कर्म, मछली पकड़ना, शिकार खेलना तथा जंगल साफ करना आदि।

(3) **निर्माणी उद्योग** (Manufacturing Industry)—निर्माणी उद्योगों से तात्पर्य ऐसे उद्योगों से है जो वस्तुओं का रूप परिवर्तन कर देते है। दूसरे शब्दों में, जब कच्चे माल अथवा अर्द्ध पक्के माल को पूर्णतया पक्के माल में परिवर्तित कर दिया जाए, तो उसे 'निर्माणी उद्योग' कहेंगे, जैसे—लौह एवं इस्पात उद्योग, शक्कर उद्योग, वस्त्र उद्योग आदि।

(4) **रचनात्मक उद्योग** (Construction Industry)—रचनात्मक उद्योगों से तात्पर्य ऐसे उद्योगों से है जो वस्तुओं का रूप परिवर्तित करके उन्हें अधिक उपयोगी तथा सुन्दर बना देते है, जैसे—भवन-निर्माण, सड़क निर्माण, नहर तथा बाँध-निर्माण आदि।

(II) **वाणिज्य** (Commerce)

आशय (Meaning)—वाणिज्य क्रियाएँ उद्योग द्वारा उत्पादन का कार्य पूरा कर लेने के पश्चात् प्रारम्भ होती है और उपभोक्ता के पास वस्तु पहुँचने के पश्चात् समाप्त हो जाती है। इस प्रकार वाणिज्य उत्पादक और उपभोक्ता दोनों के बीच की दूरी पाटने का कार्य करता है। उत्पादक तथा उपभोक्ता दो किनारों पर स्थित होते हैं। उत्पादक से उपभोक्ता तक माल पहुँचने तक अनेक बाधाएँ (जैसे—समय, स्थान, सूचना, विनिमय तथा व्यक्तिगत आदि) आती है और वाणिज्य इन सभी बाधाओं का उन्मूलन करता हुआ वस्तुओं को उपभोक्ताओं तक पहुँचाने का कार्य करता है। इस प्रकार वाणिज्य में हम व्यापार (क्रय-विक्रय) के अतिरिक्त वे सभी सहायक क्रियाएँ, जैसे—बैंकिंग, बीमा, विपणि आदि भी सम्मिलित करते हैं।

परिभाषाएँ (Definitions)—"विस्तृत अर्थ में, वाणिज्य में उन समस्त क्रियाओं का समावेश होता है जो माल और सेवाओं के वितरण से सम्बन्धित है, ताकि वे उपभोक्ताओं तक न्यूनतम बाधा से पहुँच जाएँ।"[1] **प्रो. जे. स्टीफेन्सन** के शब्दों में "वाणिज्य उन समस्त विधियों का योग है जिनके द्वारा वस्तुओं के विनिमय में आने वाली व्यक्ति (व्यापार), स्थान (यातायात एवं बीमा), समय (संग्रह) तथा वित्तीय (बैंकिंग) बाधाओं को दूर किया जाता है।"[2] **थामस** के अनुसार, "वाणिज्यिक क्रियाएँ माल के क्रय-विक्रय, वस्तुओं के विनिमय तथा तैयार माल के वितरण से सम्बन्धित है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि वाणिज्य क्रियाएँ वितरण से सम्बन्ध रखती है और इनके द्वारा वस्तुओं के वितरण में आने वाली बाधाओं को दूर किया जाता है। यह उल्लेखनीय है कि वाणिज्य में वस्तुओं के व्यापार अर्थात् क्रय-विक्रय को ही सम्मिलित नहीं करते बल्कि उन सभी क्रियाओं को सम्मिलित करते है जो क्रय-विक्रय में सहायता पहुँचाती है, जैसे—वे क्रियाएँ जो यह निश्चित करने में सहायता देती है कि किन वस्तुओं का उत्पादन किया जाए ? वस्तुओं का विक्रय कहाँ किया जाए ? कौन-सी वस्तु का क्रय किया जाए? कौन-सी वस्तुओं का विक्रय किया जाए ? आदि भी वाणिज्य में ही सम्मिलित है।

वाणिज्यिक क्रियाओं का वर्गीकरण (Classification of Commercial Activities)

वाणिज्य को मुख्य रूप से दो क्रियाओं में विभाजित किया जाता है—

(1) व्यापार (Trade),

(2) व्यापार में सहायक क्रियाएँ (Auxiliaries to trade)।

(1) **व्यापार** (Trade)

आशय—सामान्यत: व्यापार से आशय वस्तुओं के क्रय-विक्रय से होता है। क्रय-विक्रय का उद्देश्य पारस्परिक लाभ कमाना होता है। एक क्रेता किसी वस्तु को उसी अवस्था में खरीदता है जबकि उसे उस वस्तु के क्रय से सन्तोष अथवा उपयोगिता प्राप्त होती है। इसी प्रकार विक्रेता भी वस्तु को तभी बेचना चाहता है जबकि उसे वस्तु के विक्रय से लाभ हो। अत: हम कह सकते हैं कि "व्यापार का आशय क्रेता व विक्रेता दोनों के पारस्परिक लाभ हेतु वस्तुओं के विनिमय से है।"[3] व्यापार के अन्तर्गत वस्तुओं व सेवाओं को प्रत्यक्ष रूप से उपभोक्ताओं को बेचा जाता है अथवा मध्यस्थों को बेचा जाता है जो बाद में उसे उपभोक्ताओं को बेचते हैं। इस प्रकार व्यापार के अन्तर्गत उपभोक्ताओं को वस्तुओं का विक्रय प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से किया जाता है। व्यापार में केवल वस्तुओं के विनिमय को सम्मिलित किया जाता है और अन्य सहायक सेवाएँ इसके क्षेत्र में नहीं आतीं। व्यापार, वाणिज्य का केन्द्र-बिन्दु होता है और सभी वाणिज्यिक क्रियाएँ इसके चारों ओर चक्कर लगाती हैं।

व्यापार के प्रकार (Kinds of Trade)—व्यापार मुख्यत: निम्न दो प्रकार का होता है—(1) देशी व्यापार, तथा (2) विदेशी व्यापार।

(1) **देशी व्यापार** (Inland or Home Trade)—जब वस्तुओं का क्रेता तथा विक्रेता दोनों एक ही देश में रहते हों तो उनके बीच हुआ व्यापार देशी व्यापार कहलाता है। इसे कभी-कभी अन्तर्स्थानीय अथवा क्षेत्रवर्तीय व्यापार भी कहते हैं।

---

1 "Commerce in broader sense comprises of all those activities which are concerned with the distribution of goods and services so that these may reach the consumers with a minimum of inconvenience."

2 "Commerce is the sum total of those processes which are engaged in the removal of the hindrances of persons (trade), place (transport and insurance) and time (warehousing) in the exchange (banking) of commodities." —*Prof. J. Stephenson*

3 "Trade means exchange of commodities for the mutual benefits of both, the seller and the buyer."

का क्षेत्र देश की आन्तरिक सीमाओं तक ही सीमित रहता है। देशी व्यापार निम्न तीन प्रकार का

—स्थानीय व्यापार से आशय ऐसे व्यापार से है जो किसी स्थान विशेष तक ही सीमित होता है। उपभोक्ता तथा उत्पादक दोनों ही स्थानीय होते है। उदाहरण के लिए, साग-सब्जी, दूध-दही, मकखन, , भूसा आदि का व्यापार स्थानीय व्यापार होता है।

ार—राज्यीय व्यापार से आशय ऐसे व्यापार से है जो किसी राज्य विशेष तक ही सीमित होता है। नेर, जयपुर, कोटा, उदयपुर आदि नगरों के बीच का व्यापार राजस्थान राज्य की सीमाओं के अन्दर व्यापार कहलायेगा।

य व्यापार—अन्तर्राज्यीय व्यापार से आशय ऐसे व्यापार से है जो एक ही देश की सीमाओं के अन्तर्गत व होता है। उदाहरण के लिए, बंगाल तथा मध्य-प्रदेश के बीच होने वाला व्यापार अन्तर्राज्यीय व्यापार

व्यापार (Foreign Trade)—"विदेशी व्यापार से आशय दो या दो से अधिक पृथक् सत्ताधारी देशों के सेवाओं के विनिमय से है।"[1] यदि क्रेता और विक्रेता दोनों अलग-अलग सत्ताधारी देशों में रहते हों तो क्रय-विक्रय 'विदेशी व्यापार' कहलाता है। इस प्रकार विदेशी व्यापार में वस्तुएँ एक देश की सीमाओं को देश की सीमाओं में प्रवेश करती है। उदाहरण के लिए, पाकिस्तान तथा भारत के बीच होने वाला व्यापार कहलायेगा।

यापार निम्न तीन प्रकार का होता है—

ात व्यापार (Import Trade)—आयात व्यापार से आशय दूसरे देशों से माल अपने देश में मँगवाने से है। का क्रेता विदेशों से माल का क्रय करके उसे अपने देश की सीमाओं में लाता है तो उसे उस देश का आयात है। उदाहरण के लिए, अमेरिका से भारत में आने वाला कागज आयात व्यापार कहलायेगा।

र्यात व्यापार (Export Trade)—निर्यात व्यापार से आशय अपने देश से विदेशों को माल भेजे जाने से है। के कारण माल देश की सीमाओं से बाहर भेजा जाता है, तो उसे उस देश का निर्यात व्यापार कहते हैं। उदाहरण ारत से अमेरिका को चाय, जूट, सूती वस्त्र आदि वस्तुएँ भेजी जाती हैं। यह हमारा निर्यात व्यापार कहलायेगा।

निर्यात हेतु आयात (Entrepot)—जब वस्तुएँ किसी एक देश में दूसरे देश से स्थानीय उद्योग के लिए आयात यी हों, वरन् वहाँ से किसी अन्य देश को निर्यात करने के उद्देश्य से ही आयात की गयी हों, तो ऐसे व्यापार को तु आयात' कहते है। इस प्रकार इसमें एक राष्ट्र दो राष्ट्रों के बीच मध्यस्थ का कार्य करता है। माल केवल बन्दरगाह के लिए आता है, क्योंकि उसका तुरन्त ही बन्दरगाह से दूसरे देशों को निर्यात हो जाता है। उदाहरण के लिए, अफ्रीका का माल पहले इंग्लैण्ड के बन्दरगाहों पर उतारा जाता है फिर उसे अन्य यूरोपीय देशों को भेजा जाता है।

ापार में सहायक क्रियाएँ (Auxiliaries to Trade)

वाणिज्य में व्यापार के साथ-साथ व्यापार में सहायक क्रियाओं को भी सम्मिलित किया जाता है। वस्तुओं के वितरण में वाली वैयक्तिक समस्या व्यापार द्वारा हल की जाती है और अन्य समस्याएँ जैसे समय, स्थान, जोखिम आदि व्यापार हायक क्रियाओं द्वारा दूर की जाती है। व्यापार में सहायक क्रियाओं में यातायात, बैंक, बीमा, गोदाम, तार-टेलीफोन आदि सम्मिलित किया जाता है। वर्तमान समय में विज्ञापन एजेन्सियों, अनुसन्धान एजेन्सियों आदि से भी वस्तुओं का वितरण सुविधाजनक बनाने में काफी मदद मिलती है। अत: इन्हें भी व्यापार में सहायक क्रियाओं में सम्मिलित किया जाता है। तव में देखा जाए तो व्यापार में सहायक क्रियाएँ अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं और इन्हें केवल सहायक क्रियाएँ न कहकर सम्पूर्ण